INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

पर्यावरण–चिन्तन आधुनिक आर्थिक परिपेक्ष्य

''पश्यैतान् मधभागान् पराबैंकान्तजी वितान्।
वातवर्षातपहिमान सहन्तरे वारयन्ति नं:।।

(Environmental Reflection Modern Economic Perspective)

डॉ. ज्योति जोशी
(संस्कृत विभागाध्यक्ष)
एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
सांगानेर, जयपुर (राजस्थान, भारत)

रेणु बाला शर्मा
(व्याख्याता)
आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध
एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
सांगानेर, जयपुर (राजस्थान, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/05.2022-47696742/IRJHIS2205011

प्रस्तावना:

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को दैवतुल्य स्थान प्राप्त है। आदिम सभ्यता से ही प्रवृत्ति के नाना रूपों यथा–सूर्य धरती, नहीं, पर्वत, पीपल, खेजड़ी, गाय, बैल आदि की पूजा का विधान भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। पर्यावरण मनुष्य की जीवनदायिनी सत्ता है। पर्यावरण का अर्थ है–

जीवन को संरक्षण प्रदान करने वाला कवच अर्थात् हमारे चारों ओर का आवरण। पर्यावरण संरक्षण से अभिप्राय है कि हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करें तथा उसे अनुकूल बनाएं। पर्यावरण और प्राणी एक–दूसरे पर आश्रित है। यही कारण है कि भारतीय चिन्तन परम्परा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है, जितना यहाँ मानव जाति का ज्ञात इतिहास है। सृष्टि में प्राणी–मात्र का जीवन प्रवृत्ति के बिना असंभव है।

मानव की पर्यावरण पर भौतिक निर्भरता -

भौतिक विकास के दौर में मानव पर्यावरण पर निर्भर करता है। चाहे नागर सभ्यता हो या तपोवन संस्कृति, साधारण मनुष्य हों या साक्षात् दिव्य पात्र– कालिदास ने भोजन, आवास, वस्त्र, श्रृंगार औषधि इत्यादि के लिए मानव की पर्यावरण पर निर्भरता का संकेत करके मानव–पयार्वरण सम्बन्ध का व्यावहारिक आधार प्रस्तुत कर दिया।[1]

प्रकृति के साहचर्य में रहने वाले तपस्वी पर्णकुटी में रहते हैं।[2] बल्कल–वृक्ष को वस्त्र के रूप में धारण करते हैं। कुश समिधादि का आहरण करते हैं। (अभि.शा.१४.७०) वन की निर्माण वायु, वन–नदियों के पुण्य जल का सेवन करते है। सरोवरादि में स्नान करते हैं। (रघु–१/१४) वृक्षों से पुष्प–फल औषधि ग्रहण करते हैं।[3] सुसंस्कृत नागर– मानव की सुख–सुविधा के सभी साधन पर्यावरण से ही प्राप्त होते हैं।

मानव तथा पर्यावरण में संवेदनात्मक सम्बन्ध -

भौतिक आवश्यकताओं की पूति का साधन बनते–बनते पर्यावरण मानव का संवेदनात्मक रूप से भी प्रभावित करता है। मानव प्राकृतिक सौंदर्य से निरपेक्ष नहीं रह सकता और उसकी अनुपम चारूता को निहार कर मुदित होता है।[४] मानव के प्रति प्रकृति की संवेदना अत्यन्त सूक्ष्म रूप से अभिव्यक्त होती है। उदाहरण के रूप में उर्वशी के विरह से व्यथित पुरूखा के मनोविनोद के लिए बसन्तकालीन मलयानिल प्रमदवन के अतिथिभूत पुरूखा के की विनम्र अभ्यर्थना करता है और अति मुक्तनलता–मण्डप ने भ्रमरों द्वारा गिराए गये पुष्प मानो पुरूखा के स्वागत में ही बिछा रखे हैं।[५]

मानव तथा पर्यावरण का सम्बन्ध एकपक्षीय नहीं होता। मानव प्रकृति के प्रति सुदृढ़ भाव रखता है तो प्रकति भी स्नेह का प्रतिदान अवश्य देती है। कालिदस की प्रवृति– संवेदना–विहीन जड़ प्रकृति नहीं है, वह तो मानव की भावात्मक सहचरी है। प्रकृति द्वारा व्यक्त संवेदना को समझने के लिए मानव को अपनी संवेदना–ग्राहक–क्षमता का विकास करना होगा। भौतिकवादी जीवनशैली में मानव पर्यावरण के सजह क्रम को जानते हुए भी अपनी आवश्यकता को प्रमुखता प्रदान करता है और पर्यावरण को अपने अनुसार परिवर्तित करने की प्रवृत्ति रखता हैं इसका उज्जवल उदाहरण राजा दुष्यन्त निसर्ग शोभा का प्रशंसक और तपोवन का उपासक राजार्षि है। उसका दृष्टिकोण उपभोग–प्रधान है। महाकवि कालिदास के इन प्रसंगों से मानव स्वभाव की ओर इंगित करते है कि मनुष्य स्वार्थ का व्याघात न होने तक ही अपने प्रवृत्ति–प्रेम को सुरक्षित रख पाता है, अन्यथा उसके लिये स्वार्थ ही सर्वोपरि है। प्रकृति की स्वाभाविकता से सुपरिचित होते हुए भी विवेकशील–संवेदनशील मानव उसके स्वानुकूल ही बने रहने की अपेक्षा करता है।

प्रकृति पर आत्मनिष्ठ भावों का आरोपण भावात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक तो होता है किन्तु उसके वस्तुनिष्ठ स्वरूप को पहचानना और उसक अनुरूप अपने आचार–विचार को ढालना, ही मानव का पर्यावरण के प्रति उपयुक्त अनुकूलन है।

पर्यावरणीय अवधारणा -

आधुनिक परिपेक्ष्य में पर्यावरण संकट ऐसी विकराल विभीषिका बनकर मानव–सभ्यता के सामने खड़ा है, जिसकी सर्वनाशी छाया वर्तमान में नहीं, भविष्य पर भी मण्डरा रही हैं यह सत्य है कि आज के विज्ञान सम्पन्न मानव के लिए न केवल पृथ्वी, अपितु ब्रह्माण्ड के रहस्य की हस्तामलकवत् है। पर्यावरण विज्ञान की आधुनिक अवधारणा के अनुसार प्रकृति तथा पर्यावरण में तत्त्वत: कोई भेद नहीं हैं समस्त ज्ञान ब्राह्मण प्रकृति है और जीन के लिए समस्त जैविक–अजैविक परिस्थितियों का योग ही ''पर्यावरण'' है।[६]

पर्यावरणीय अर्थव्यवस्था–

पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिये आर्थिक विकास के रास्ते पर चलने का सही समय ही कोविड–१९ महामारी को देखते हुए केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के समन्वय से देश के लिए एक पर्यावरण अनुकूल आर्थिक विकास का मॉडल जरूर विकसित होना चाहिए। मॉडल के लिए शहर सबसे महत्त्वपूर्ण हैं, ये केन्द्रीय सरकार के स्मार्ट सिटी मिशन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। पर्यावरण अनुकूल मॉडल में बदलने के लिए डिजिटल इंजीनियरिंग और प्रोसेस टेक्नोलॉजी विकसित करनी चाहिये। ताकि पूरे भारत में ही नहीं जीवन जीने की पद्धति बन जाए बल्कि जब हमारी प्रति व्यक्ति खपत अभूतपूर्ण स्तर पर पहुंच जाए तो हम इसका फायदा उठाने के लिए भी तैयार रहें।

निष्कर्षत:–

पर्यावरण–चिन्तन आर्थिक, भौगोलिक, प्राकृतिक आदि संकटों के निवारण के लिये, कल्याण की सिद्धि सबकी कामना–पूर्ति और सर्वत्र आनन्द–प्रसार की सुमंगल–भावना से यह मन्त्र, ओतप्रोत है–

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।

सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।

(विष्णु पुराण ५.२५)

संदर्भ :–

(1) पर्यावरण चिनतन–डॉ. वन्दना, पृ. ८४

(2) कालिदास रघुवंश–१/५०

(3) अभिज्ञान शा. ४/१४

(4) ऋतुसंहार– २/८, ३ सर्ग /१६ श्लोक

(5) विक्रमोर्वशीयम्– २ अंक, पृ. १५७

(6) अभिज्ञान शाकुन्तलम–कालिदास वृत प्रथम अंक पृ. सं. ९, २/१३

(7) Fedrove E. Man & Nature, p. 8.

(8) पर्यावरणः परिचय और परिभाषा– अध्याय–१ प्राचीन भारत में पर्यावरण चिन्तन–डॉ. वन्दना रस्तोगी।

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS